

भारत में लीची की खेती का वसितार

स्रोत: डाउन टू अर्थ

परंपरागत रूप से बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर ज़िले तक सीमिति रहने वाली लीची की कृषि में 19 भारतीय राज्यों में महत्त्वपूर्ण वसितार देखा गया है, जो भारत में बागवानी को बढ़ावा देता है।

- यह विकास बिहार के मुज़फ़्फ़रपुर स्थिति राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र (National Research Centre on Litchi- NRCL) के पर्यासों से हुआ है।



लीची के बारे में मुख्य तथ्य क्या हैं?

- वनस्पति वर्गीकरण: लीची सैपिन्डिसेसी परिवार (Sapindaceae family) से संबंधित है और अपने स्वादुषिट, रसीले, पारदर्शी एरलि (translucent aril) या खाने योग्य गूदे के लयि जानी जाती है।
- जलवायु: लीची मुख्यतः उपोष्णकटबिंधीय जलवायु में उत्पादति होती है और नम स्थितियों इसकी खेती के लयि अनुकूल होती हैं। इसकी फसल के लयि कम ऊँचाई वाले कृषेत्रों में, लगभग 800 मीटर की ऊँचाई तक, आदर्श जलवायु होती है।
- मृदा: लीची की खेती के लयि आदर्श मटिटी कार्बनिक पदार्थों से भरपूर गहरी, अच्छे जल निकासी वाली दोमट मटिटी होती है।
- तापमान: लीची अत्यधिक तापमान के प्रति संवेदनशील है। यह गर्मियों में 40.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान या सर्दियों में ठंडे तापमान को सहन नहीं कर सकती है।
- वर्षा का प्रभाव: लंबे समय तक वर्षा, वशिषकर फूल आने के दौरान, इसके परागण में बाधा उत्पन्न कर सकती है तथा फसल पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।
- भौगोलिक कृषि: भारत में वाणज्यिक कृषि परंपरागत रूप से उत्तर में त्रपुरा से लेकर जम्मू-कश्मीर तक हिमालय की तलहटी पहाडियों

तथा उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के मैदानी इलाकों तक ही सीमति थी।

◦ भारत के लीची उत्पादन का लगभग 40% मात्र बिहार में होता है। बिहार के बाद पश्चिम बंगाल (12%) तथा झारखंड (10%) का स्थान है।

■ वैश्विक उत्पादन: चीन के बाद भारत विश्व स्तर पर लीची का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। अन्य प्रमुख लीची उत्पादक देशों में थाईलैंड, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-अफ्रीका, मेडागास्कर तथा संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं।

उद्यान कृषि क्या है?

■ परिचय:

- उद्यान कृषि (हॉर्टीकल्चर) से तात्पर्य फलों, सब्जियों, फूलों, सजावटी पौधों तथा अन्य फसलों की कृषि के विज्ञान, कला एवं अभ्यास से है।
- इसमें मानव उपयोग तथा उपभोग के लिये पौधों की खेती, प्रबंधन, प्रसार एवं सुधार से संबंधित गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है।

■ उद्यान कृषि के लिये पहल:

◦ एकीकृत उद्यान कृषि विकास मशिन:

- एकीकृत उद्यान कृषि विकास मशिन (**Mission for Integrated Development of Horticulture- MIDH**) फलों, सब्जियों और अन्य कृषकों को कवर करने वाले उद्यान कृषि क्षेत्र के समग्र विकास के लिये एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
- MIDH के तहत, भारत सरकार सभी राज्यों में विकासात्मक कार्यक्रमों के लिये कुल परवियय का 60% योगदान देती है (उत्तर पूर्वी और हिमालयी राज्यों को छोड़कर जहाँ केंद्र सरकार 90% योगदान देती है) तथा 40% योगदान राज्य सरकारों द्वारा दिया जाता है।

◦ उद्यान कृषि क्लस्टर विकास कार्यक्रम:

- यह एक **केंद्रीय क्षेत्र का कार्यक्रम** है जिसका उद्देश्य चिह्नित उद्यान कृषि समूहों को विकसित करना और उन्हें विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है।
- 'उद्यान कृषि क्लस्टर' लक्षित उद्यान कृषि फसलों का एक क्षेत्रीय/भौगोलिक संकेंद्रण है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न: बागवानी फार्मों के उत्पादन, उसकी उत्पादकता एवं आय में वृद्धि करने में राष्ट्रीय बागवानी मशिन (एन.एच.एम.) की भूमिका का आकलन कीजिये। यह किसानों की आय बढ़ाने में कहाँ तक सफल हुआ है? (2018)